International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(6): 259-261

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(6): 259-261
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 19-09-2021
Accepted: 22-10-2021

**डॉ0 वाचस्पति**
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
जवाहरलाल नेहरू कालेज, एटा,
उत्तर प्रदेश, भारत

**Corresponding Author:**
**डॉ0 वाचस्पति**
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
जवाहरलाल नेहरू कालेज, एटा,
उत्तर प्रदेश, भारत

# सामंती जीवन और राजनीति

## डॉ0 वाचस्पति

**प्रस्तावना**

जाति आधारित राजनीति, अवसरवाद, भ्रष्टाचार, जाति के आधार पर राजनीतिक संगठन करना तथा भोग–विलासिता का जीवन जीना सामंतवादी राजनीति के लक्षण हैं। 'परती परिकथा' में जित्तन अपने निजी अनुभवों से राजनीति के चरित्र एवं कटुता को देखकर उसके प्रति वितृष्णा से भर जाता है, इसलिए वह किसी पार्टी में शामिल नहीं होना चाहता। राजनति के जाल–फरेब से दूर रहकर विकास कार्य करने को अपना ध्येय बना लेता है। वास्तव में रेणु ने विभिन्न पार्टियों– कांग्रेस, कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट, समाजवादी– के विकृत रूप को दिखाकर, उनकी स्वार्थ प्रेरित नीतियों को दिखाकर, इसी को आदर्श स्थिति माना है कि राजनीति से स्वतंत्र रहकर व्यक्ति प्रगतिशील कार्य करे।''[1] 'जित्तन गाँव की पार्टियों की राजनीति का हिस्सा नहीं बनना चाहता है, किंतु गाँव की राजनीति का शिकार वह हो जाता है। उसे लहू–लुहान कर दिया जाता है, किंतु जित्तन के मन में गाँव वालों के प्रति कोई रोष नहीं है क्योंकि वह जानता है यह काम जनता का नहीं अपितु जनता लुत्तो जैसे लोगों की गंदी राजनीति का शिकार हो रही है। लुत्तो परानपुर का 'जाहिल और लंगीबाज' राजनीतिज्ञ है जिसमें बेइमानी, धूर्तता, स्वार्थपन आदि प्रतिक्रियावादी तत्व मौजूद हैं।

विशाल भूमिहीनों की जमात में चेतना जाग्रत कर भूमि समस्या को हल करने का कार्य राजनीतिक नेताओं को करना चाहिए, क्योंकि वे जनता के प्रतिनिधि होते हैं। हम देखते हैं कि परानपुर गाँव में लगभग सभी राजनीतिक दलों की शाखा है, बावजूद इसके गाँव की हालत बिगड़ी हुई है। निश्चित रूप से इसका एक कारण विभिन्न जातियों के टोलों में व्याप्त वैमनस्य है मगर यह भी तो सच्चाई है कि राजनीतिक दल जाति आधारित राजनीति को बढ़ावा देकर इस वैमनस्य को और अधिक प्रबल बना रहे हैं। वे अपने स्वार्थों की सिद्धि हेतु जनता को अंधविश्वासों में धकेल रहे हैं। 'परती परिकथा' इसका स्पष्ट प्रमाण है। परती को उर्वर बनाने संबंधी कार्य हों, कोसी योजना की समस्या को हल करने संबंधी कार्य हो या फिर भूमिहीनों की समस्या को ध्यान में रखकर चलाए गए भूदान आन्दोलन की बात। हम देखते हैं कि धूर्त, स्वार्थी नेताओं द्वारा जनता को इनके विरुद्ध भड़काया जाता है। इन विकास कार्यों की गलत व्याख्या जनता तक पहुँचाई जाती है और यह साबित करने की कोशिश की जाती है कि ये सब कार्य अपने हित में नहीं हैं। गोपाल राय ने ठीक ही लिखा है, ''कांग्रेस पार्टी के अधिकतर नेता जमींदार का वोट पाने के लिए उन्हें झूठे आश्वासन देते थे और दूसरी तरफ अपने वर्ग स्वार्थों से जुड़े रहने के कारण भूमि–सुधार कार्यक्रमों को खटाई में डालते रहते थे।''[2] लुत्तो जैसे कांग्रेसी इसके उदाहरण हैं।

वास्तव में लुत्तो जमींदारी व्यवस्था को बनाए रखना चाहता है, उसका विरोध जमींदारी व्यवस्था से नहीं है अपितु जित्तन से है। वह अपने पिताजी का बदला उससे लेना चाहता है इसलिए वह जित्तन द्वारा किए जाने वाले हर कार्य का विरोध करता है। लुत्तो कांग्रेस में इसलिए शामिल हुआ ताकि जित्तन से प्रतिशोध ले सके। यह भावना उसे स्वार्थी, अमानवीय और अत्याचारी बना देती है। स्वतंत्रता के पश्चात सत्ता संचालन की जिम्मेदारी जिस राष्ट्रीय कांग्रेस को सौंपी गई, वह आगे चलकर जनता के हितों की पोषक न रहकर पूँजीपतियों के हाथ का खिलौना मात्र बन गई। जमींदार अपनी जमीन खोने के डर से उसे बेचकर, पूँजीपति बन गए और कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ले ली। इसमें पार्टी का निजी स्वार्थ तो होता ही था, स्वयं शामिल होने वाले उस व्यक्ति का स्वार्थ भी शामिल था। इसमें भारतीय जनता के सारे स्वर्णिम सपने, आशा, आकाँक्षाएँ धूमिल होती गईं और निम्न वर्ग आर्थिक विषमता से ग्रस्त होकर पिसता रहा। 'परती परिकथा' में मीर समसुद्दीन स्वराज होने से पाँच दिन पहले तक कहा करता था 'कांग्रेसी मुसलमाँ मक्कार हैं गद्दार हैं, काफिरों के चंद टुकड़ों पर पले...।' उसी व्यक्ति को अब "राजनीतिक लंगी लग गयी... और तीसरे ही दिन मीर समसुद्दीन कांग्रेसी हो गया। थाना कमिटी का मेम्बर है वह । एम.एल.ए. या एम.एल.सी. बनायें कोई बात नहीं, सर्वे में पैरवी करके जमीन दिलवा देना कांग्रेस का कर्त्तव्य है। इसलिए समसुद्दीन की ओर से पैरवी कर रहा है खुद लुत्तो।''[3]

दूसरे उदाहरण के रूप में राजा साहब मौजूद हैं जिन्होंने 'जमींदारी उन्मूलन के बाद अपने ही जिले में पार्टी की स्थापना' की है। वह कहता है ''अपने इस्टेट के तीन सर्किल मैनेजर, पचास पटवारी और डेढ़ प्यादों को लेकर मैंने प्रजापार्टी का शिलन्यास किया। कहा– चलो! तुम्हारी नौकरियाँ अपनी जगह पर बरकरार! जमींदारी चली गयी, राजा चला गया, फिर भी मैं वेतन दूंगा। ओहदा बदल गया, काम बदल गया है।''[4] राजा साहब जमींदारी व्यवस्था के पोषक हैं, जमींदारी खत्म हो गयी तो अब नई पार्टी बनाकर राजनीति करना शुरू कर दिया। राजा साहब की पार्टी एवं पार्टी के सारे नेताओं का चरित्र क्या होगा यह हम उस समय देखते हैं जब वह जित्तन को पार्टी में शामिल होने के लिए कहता है और जित्तन शामिल होने से इंकार कर देता हैं तब वह कहता है "मैंने समझा था तुम मिलीटेंट हो। मुझे क्या मालूम था कि एक हिजड़े से मिलने जा रहा हूं... परती की तरह निपटू निकले तुम! लाज नहीं आती? पतनीदार का बेटा है।''[5] वास्तव में राजा साहब जित्तन के पास इसीलिए आता है कि वह भी किसी दिन अपने पिता शिवेन्द्र मिश्र जैसा 'मिलीटेंट' होगा। मगर उसे निराशा ही हाथ लगती है। इससे पता चलता है कि स्वतंत्र भारत में 'राजा साहब' जैसे जमींदारों, 'मिलीटेण्टो' ने अपने–अपने स्वार्थ साधने हेतु नई–नई पार्टियाँ बनाई, जिसमें जित्तन जैसे लोगों को नहीं अपितु भ्रष्ट, आतंकी, सामंती मानसिकता वाले पूँजीपति लोगों को मौका दिया गया, उन्हें ही शामिल किया गया। रेणु जी 'जलवा' नामक कहानी में फातिमादि, राजनीति की संकीर्णता और स्वार्थपरकता के कारण राजनीति से सन्यास ले लेती है ठीक 'परती परिकथा' की इरावती और जित्तन की तरह। कारण पूछने पर कि 'आपने पॉलटिक्स क्यों छोड़ दी' तब वह कहती है ''यह मुझसे क्यों पूछते हो? अपने उन नवाबजादों से कभी क्यों नहीं पूछा, जो रातों रात 'देश–भगत' बनकर कांग्रेस के खेमे में दाखिल हो गये– बगल में छुरी दबाकर। अपने नेताओं से क्यों नहीं जवाब–तलब करते? कल तक गाँधी–जवाहर–पटेल को सरेआम गालियाँ देने वाले, कौमी झंडे को जलाने वाले फिरकापरस्त लीगियों की इज्जत–अफजाई की गयी और मुल्क के लिए मरने–मिटने वालों को दूध की मक्खी की तरह निकाल फेंका।''[6]

रेणु ने कांग्रेस के अलावा समाजवादी दल, कम्युनिस्ट पार्टी आदि की वास्तविकता को भी उजागर किया है और इनके माध्यम से पूरी राजनीति में फैल रहे भ्रष्ट्राचार, शोषण और स्वार्थ को दिखाने के प्रयास में वे कहीं नहीं चूकते। 'परती परिकथा' में समाजवादी दल का प्रमुख रामनिहोरा दास है, जिसके पास पार्टी की पुरानी रसीद बही है जिस पर वह चुपचाप, चोरी–छिपे चन्दा वसूलता है, खाता है। इसी प्रकार मकबूल जो कम्युनिस्ट होने का दंभ भरता है, किसान–मजदूरों के हितों की बात करता है, उसके तीनों भाई गरीबों का गला घोंटते हैं, नौकरों को बुरी तरह पीटते हैं। मकबूल यह सब देखता ही नहीं बल्कि कहता है ''और मारिये साले को। बड़ा काबिल हो गया है। यही नहीं कम्युनिस्ट बनने से पहले उसने ब्राह्मणवादी मानसिकता को अपना नाम पीतांबर झा से मकबूल रखा बावजूद इसके उच्च जाति का होने का अहंकार उसमें से नहीं जा पाता।

ये राजनीतिक पार्टियाँ तरह–तरह के आडंबरों से युक्त होने के साथ–साथ अवसरवादी भी हैं। रेणु अवसरवादी राजनीति का बड़ा रोचक चित्रण अपने उपन्यास 'परती परीकथा' के विभिन्न प्रसंगों में करते हैं। परानपुर पार्क के निर्माण की सफलता के उपलक्ष में जित्तन द्वारा भोज आयोजित किया जाता है। इस प्रीतिभोज में रंगलाल गुरूजी के अतिरिक्त ''सुचितलाल मड़र भी भोज खाने के पक्ष में है। वह अपनी जाति और टोले का मड़र है। उसके गाँव वाले नहीं मानेंगें।''[7] इसी प्रीतिभोज के अवसर पर मकबूल जो कम्युनिस्ट पार्टी का लीडर है, अपने सक्रिय कार्यकर्ताओं को संबोधित कर सवाल रखता है कि 'किसानों और मजदूरों के मुँह से कौर छीनकर जो यह भोज दिया जा रहा है, उसमें शिरकत कहाँ तक जायज है?' पार्टी के कार्यकर्ताओं के भीतर काफी वाद–विवाद होने के बाद मकबूल अपना समाजवादी सत्य प्रकट करता है, ''साथियों मेरे ख्याल में सबसे सही रास्ता यह है कि कम्युनिस्ट की हैसियत से हम इस भोज का विरोध करें और ग्रामवासी के नाते इंसमें जरूर शामिल हों।"[8] यह प्रकट सत्य उसके एवं राजनीतिक पार्टियों के अवसरवादी चरित्र को दिखाता है, जिसमें सिद्धांततः चाहे जितना कम्युनिस्ट बनने के दावे करें मगर व्यावहारिक रूप में वही करेंगें जो एक भ्रष्ट एवं अवसरवादी राजनीति करती है।

रेणु ने देखा कि राजनीतिक पार्टियाँ देश सेवा के नाम पर अपने स्वार्थों को ही केन्द्र में रखकर कार्य कर रही है, वह कांग्रेस हो, कम्युनिस्ट पार्टी हो या समाजवादी पार्टी राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार, स्त्री–शोषण व भोग विलासिता जैसे दुर्गुणों को देखकर इरावती का मन संशयी हो जाता है, ''...दस महीने में ही उसने तीन राजनीतिक पार्टियों से अपना रिश्ता जोड़ा और तोड़ा। कहीं भी चैन नहीं! किसी पर विश्वास नहीं।''[7] राजनीति का भ्रष्ट, विकृत रूप तब दिखाई देता है जब इरावती को उसका नेता भैया रात्रि में ट्रेन के सफर के समय अपनी शारीरिक वासना का शिकार बनाने की कोशिश करता है। इससे हम यह भी देख सकते हैं कि राजनीति में महिलाओं की स्थिति क्या है? 'दीर्घतपा' की बेला गुप्ता भी ऐसी ही पात्र है जो अपनी ही राजनीतिक पार्टी के साथियों की वासना का शिकार होती है। यह राजनीति का सामंती चरित्र ही है जिसे रेणु ने कई उपन्यासों में अभिव्यक्ति दी और नारी की वास्तविक स्थिति का अहसास करवाया।

**सामंती समाज और जातिवादी राजनीति**– जाति आधारित राजनीति करना लोकतांत्रिक राजनीति के स्वरूप को विकृत करना है। जिन राजनेताओं का यह कर्त्तव्य होना चाहिये कि वे समाज से जातिवाद जैसी कुरीति को उखाड़ फेंके, वही उसको अपना साधन बनाकर साध्य की प्राप्ति कर रहे हैं। राजनीतिक पार्टियाँ या दल जातिवाद को बढ़ावा दे रहे हैं। वे जाति को आधार बनाकर वोट बैंक तैयार करते हैं, सीधी–सादी जनता को गुमराह करते हैं। 'परती परिकथा' और 'मैला आँचल' राजनीतिक पार्टियों की इस सच्चाई को बेनकाब करते हैं। 'परती परिकथा' में रेणु लिखते हैं, ''पिछले आठ–दस वर्षों से जातिवाद ने काफी जोर पकड़ा है। राजनीतिक पार्टियाँ भी जातिवाद की सहायता से संगठन करना जायज समझती हैं। राजनीति के दंगल में सब कुछ माफ है।''[9] परानपुर गाँव में भी जाति के आधार पर पार्टियाँ राजनीतिक संगठन कर रही हैं। एक उदाहरण देखें, ''धोबी, चमार, नाई, बढ़ई और खवासों को विशेष रूप से संगठित होने को कहा है, सभापति जी ने। ....माने अपनी–अपनी जात की बैठक करो कि हम लोग बाल–बच्चा समेत कांग्रेस की कमेटी में हैं। ....कांग्रेस के झण्डे के नीचे एकत्र होकर कसम खाइए।''[10]

रेणु ने स्वतंत्रता के बाद के पहले दशक या कहें स्वतंत्रता के बाद के आठ–दस वर्षों में राजनीतिक पार्टियों के यथार्थ का चित्रण किया है। 'राजनीति के दंगल में सब कुछ माफ है' कहकर लेखक ने जहाँ एक ओर राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार पर कटाक्ष किया है, वहीं दूसरी ओर राजनीति में फैले जातिवाद का मुखर विरोध भी।

गाँव परानपुर में लुत्तो जित्तन से अपने बाप के अपमान का प्रतिशोध लेने के उद्देश्य से ही कांग्रेस पार्टी का दामन पकड़ता है। वह जाहिल है, राजनीतिक लंगीबाज है। जनता समझ जाती है वह 'लुच्चों का सरदार है।' लुत्तो जातिवादी राजनीति करता है, वह उन नेताओं का प्रतिनिधित्व करता है जो जाति और राजनीति का गठबंधन कर राजनीतिक संगठन कायम करते हैं। लुत्तो जाति से 'खवास' है, जब लोग 'उसे 'खवास' कहते हैं तो उसे चोट पहुँचती है मगर निम्न जाति के ही बालगोबिन मोची का मजाक' वह हँस–हँसकर उड़ाता है। बालगोबिन लुत्तो की शिकायत करते हुए कहता है, "हमेशा चमार–चमार कहता है। कहता है, यह राजनीति की बात है, ढोल–पोंपी बजाने वाले क्या समझें... ।"[11] जाति के आधार पर 'बाँटो और राज करो' की नीति की रेणु घोर निन्दा

करते हैं तथा जातिवादी राजनीति से घृणा करते हैं क्योंकि उसका कीड़ा सारी मनुष्यता को अपना आहार बना लेता है।

राजनीति में राजनीतिक संगठन कायम करने का एक ढंग और अपनाया जाता है या कहें विभिन्न ढंगों का ही एक हिस्सा यह भी है। एक पार्टी दूसरी पार्टी की निन्दा करके, लोगों के सामने उस पर आरोप लगा कर अपनी पार्टी में लोगों को लाने की कोशिश करती है। आरोप और प्रत्यारोप की इस राजनीति को 'परती परिकथा' में अभिव्यक्ति मिली है। यह नेताओं की नीतियों का ही कमाल है, उनके द्वारा फैलाये गए भ्रम का ही कमाल है कि परानपुर गाँव में सभी धीरे–धीरे जान गए हैं, ''सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट पार्टी वाले जिनकी मदद करेंगें, उन्हें जमीन हरगिज नहीं मिल सकती, ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी उठकर आवें तब भी नहीं।"[12] कांग्रेस वाले घोषणा करते हैं, 'कांग्रेस के झण्डे के नीचे एकत्रित होकर कसम खाइए।'

देश की जनता को रूढ़िवादिता, स्वार्थ, भ्रष्टाचार, से मुक्त कर विकास की नयी दिशा में प्रेरित करने का कार्य बहुत कुछ राजनीतिक इच्छा शक्ति पर निर्भर करता है। जैसा कि डॉ. रामचन्द्र हजारी ने भी लिखा है, "राजनीति सामाजिक परिवर्तन का सबसे कारगर हथियार है और व्यवस्था को बदलने में इसका सबसे महत्वपूर्ण स्थान होता है।"[13] अतः चूंकि राजनीतिक पार्टियाँ व्यवस्था को बदलने की बजाय ईर्ष्या, द्वेष, जातिवाद, विभाजन की नीति को अपनाती हैं जो लोकतन्त्र की परिभाषा में कहीं भी फिट नहीं बैठती। इसीलिए 'परती परिकथा' के अन्त में रेणु ने जित्तन के माध्यम से कहलवाया है कि "राजनीतिक पार्टियों के कार्यकर्ताओं से मैं कहूँगा कि जनता की सरलता का दुरुपयोग अपने स्वार्थ के लिए न करें। ...क्षतिपूर्ति, पुनर्वास तथा जमीन– वितरण आदि ऐसे मसले हैं जिनमें सरकारी लालफीताशाही और घूसखोरी से आप ही बचा सकते हैं, जनता को।"[14] रेणु ने वर्तमान भारतीय समाज में सरकारी लाल–फीताशाही, अफसरशाही की कड़ी आलोचना करते हुए राजनीति को ऐसा हथियार माना है जो इन सबसे मानव मन को मुक्त कर सकती है।

## संदर्भ–ग्रन्थ


1. मधुरेश हिन्दी उपन्यास का विकास पृ0 68
2. गोपालराय– उपन्यासकार रेणु और मैला आंचल, पृ0 78
3. रेणु– परती परिकथा, पृ0 31–32
4. वही, पृ0 348–349
5. वही, पृ0 349
6. सं0 भारत यायावर–फणीश्वरनाथ रेणु की श्रेष्ठ कहानियाँ, पृ0 222
7. रेणु–परती परिकथा, पृ0 276–277
8. वही, पृ0 250
9. वही, पृ0 22
10. वही, पृ0 79
11. वही, पृ0 58
12. वही, पृ0 28
13. डॉ0 रामचन्द्र हजारी–फणीश्वरनाथ रेणु के कथा साहित्य में सामाजिक विसंगतियाँ, पृ0 239
14. रेणु–परती परिकथा, पृ0 378–379